पेड़ी गन्ने में प्रमुख रोगों का प्रबन्धन

फसल की अवस्था	प्रभावी रोग	प्रबंधन विधि
पेड़ी प्रारम्भ के समय	लाल सड़न, कंडुआ, उकठा, पर्ण दाह, पेड़ी कुंठन आदि	1. ठूठों व फसल अवशेषों को खेत में ही जला देना चाहिये। खेत के आसपास खरपतवार को नष्ट कर देना चाहिये। 2. यदि बावक फसल में कंडुआ का प्रकोप हो तो खेत मे सिंचाई अवश्य करें। (सूखी भूमि कंडुआ रोग को बहुत बढ़ाती है।) 3. सूखे या पीले पत्तों वाले थान को उखाड़कर जला दें। कंडुआ ग्रसित थानों से कोड़ों को काटकर बोरों में बंद करके जला दें। 4. घासी प्ररोह से ग्रसित पौधों को भी निकालकर खेत से दूर फेक दें। कीटनाशक डाइमेक्रोन (0.02 प्रतिशत) का छिड़काव 2-3 बार 15 दिन के अन्तराल पर करना चाहिये।
जुलाई से सितम्बर	लाल सड़न, घासी प्ररोह, पर्ण दाह	1. लाल सड़न से ग्रसित गन्नों पर पैनी नज़र रखें। जैसे ही गन्ने की ऊपरी पत्तियॉं पीली पड़े या सूखें, ऐसे गन्ने को काटकर फाड़ लें और लाल सड़न के निश्चित होने पर पूरे थान को जड़ से उखाड़कर दूर ले जाकर जला दें। ऐसे खेत की मेड़ बन्दी कर दें जिससे वर्षा का पानी समीप के गन्ने के खेत मे न जाये। ऐसे खेत में प्रतिदिन ध्यान रखना आवश्यक है। 2. घासी प्ररोह से ग्रसित पौधो पर खेत के बाहरी भाग में नज़र रखें। अत्याधिक ग्रसित पौधे मिलने पर, खेत में कीटनाशक डाइमेक्रोन (0.02 प्रतिशत का छिड़काव 15 दिनों के अन्तराल पर तीन बर करें।) 3. पर्णदाह से ग्रसित थान को उखाड़ कर दें।
	गेरूआ (किट्ट)	जैसे ही पत्तियों पर गेरूआ के लक्षण दिखाई पड़े, डाइथेन M 45 (0·25%) या डाइथेन Z 78 (0·25%) घोल का छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर 3-4 बार करें।
	पीला धब्बा, आंख धब्बा	1. ग्रस्त पत्तियों को छीलकर जला दें। 2. कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (0·2%) घोल का छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर 3-4 बार करें।
अक्टूबर से कटाई तक	सभी रोग	1. कंडुआ से ग्रसित किल्ले को वर्षाकाल समाप्त होने पर उखाड़ कर नष्ट कर दें। 2. यदि रोगों का प्रकोप वर्षाकाल में अधिक हो तो फसल को शीघ्र काटकर गन्ने का निस्तारण करें।
कटाई उपरान्त	सभी रोग	यदि लाल सड़न, उकठा और कंडुआ का प्रकोप पेड़ी फसल में अधिक रहा हो तो दूसरी पेड़ी लेना लाभकारी नहीं होगा। गन्ने के अलावा दूसरी फसल लें और तदोपरान्त गन्ना बोने के लिये प्रमाणित बीज का प्रयोग करें।

गन्ने के प्रमुख रोगों का एकीकृत प्रबन्धन

सत्यमेव जयते

प्रायोजक :
भारत सरकार
कृषि मंत्रालय
(कृषि एवं सहकारिता विभाग)
गन्ना विकास निदेशालय
आठवॉं तल, हाल संख्या–3, केन्द्रीय भवन, अलीगंज, लखनऊ – 226024 (उ.प्र.)

भाकृअनुप
ICAR

प्रस्तुतिकरण, चित्रांकन एवं मुद्रण :
निदेशक
भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान
रायबरेली रोड, दिलकुशा, लखनऊ - 226002

गन्ने के प्रमुख रोगों का एकीकृत प्रबन्धन

गन्ने की फसल लम्बी अवधि की होने के कारण रोगों के बाहुल्य की संभावना अधिक होती है। गन्ने की उत्पादकता को अधिक करने के लिये इन रोगों का प्रबंधन आवश्यक है। अपने देश में कृषि पारिस्थितिकी की विभिन्नता के कारण रोगों की प्रमुखता क्षेत्रानुसार रहती है। प्रमुख रोग का ही प्रबंधन करना आवश्यक है।

अनुसंधान कार्य द्वारा कृषि वैज्ञानिकों ने रोगों के प्रबंधन के अनेक उपाय ढूंढे हैं। पर्यावरण दूषित न हो, इसके लिये जैव नियंत्रण का विकास किया गया है। इससे रसायनों के प्रयोग में अत्याधिक कमी लाई गई है। विभिन्न तकनीकों को समय–समय पर आवश्यकता अनुसार एकीकृत किया गया है जिससे रोगों का प्रबंधन प्रभावी हो सके। संस्तुत तकनीकों को निम्न सारिणी में माह अनुसार अपनाने से गन्ना किसान लाभान्वित होंगें।

बावक गन्ने मुें प्रमख रोगों का प्रबंधन

फसल की अवस्था	प्रभावी रोग	प्रबंधन विधि
बीज –गन्ने की फसल	बीज–जनित रोग(लाल सड़न कंडुआ, उकठा, घासी प्ररोह, पत्र दाह, पेड़ी कुंठन)	जिस फसल में यदि रोगी गन्ने हों तो, बीज न लें। ऐसी अवस्था में प्रमाणित बीज का प्रयोग करें एवं क्षेत्र के लिये संस्तुत प्रजाति का ही प्रयोग करें।
बीज का चुनाव	लाल सड़न, उकठा, इत्यादि	ऐसे बीज जिसकी आंख सूखी हों उनकों निकाल दें।
बीज शोधन	लाल सड़न, कंडुआ	काबेन्डेजिम (0.2 प्रतिशत) घोल में एसेटिक एसिड (0.2 प्रतिशत) डालकर बीज को 30 मिनट तक डुबोयें और तत्पश्चात् बोआई करें।
नाभिक बीज का शोधन (केवल बीज गन्ना उत्पादन हेतु)	बीज–जनित (बीजोढ़) रोग	आद्रवायुउष्मोपचार (54^0 सेल्सियस एवं 95–99 प्रतिशत आपेक्षिक आद्रता पर 2.5 घंटे)।
बोआई के समय	लाल सड़न व अन्य मृदोढ़ रोगजनक	1. खेत तैयार करते समय सभी फसल अवशेषों को निकालना आवश्यक है। 2. ट्राइकोडर्मा कल्चर (जो लाल सड़न के जैविक नियंत्राण में प्रभावी हो) को बोने से पहले नाली मे २० किलो प्रति हे० की दर (या संस्तुत दर जो लिखी हो) से डाले। 3. शरदकालीन बोआई के लिये सहफसली खेती सरसों या धनिया के साथ लाभकारी है।
अप्रैल से जून	कंडुआ, लाल सड़न, घासी प्ररोह	1. ट्राइकोडर्मा कल्चर को पुनः 20 किलो प्रति हे० की दर (या संस्तुत दर जो लिखी हो) से जड़ों के पास भुरकाव करें। 2. भूमि अधिक सूखी या अधिक नम हो तो कंडुआ रोग बढ़ने की संभावना रहती है। कंडुआ ग्रसित पौधों में बन रहे कोड़ों को पता चलते ही काटकर बोरों में भर दें और खेत से दूर लेजाकर जला दें या गडढे में दबा दें। ग्रसित पौधों को निकालना श्रेयस्कर है। इससे रोग का फेलाव कम होता है। 3. लाल सड़न से प्रभावित क्षेत्रों में वर्षाकाल से पूर्व खेत में कम से कम सिंचाई करें। इस रोग से सूख रहे पौधों को जड़ से निकाल कर जला दें। घासी प्ररोह से ग्रसित पौधों को भी निकालकर खेत से दूर नष्ट करें। ऐसी स्थिति में, कीटनाशक डाइमेक्रोन (0.02 प्रतिशत) का छिड़काव 15 दिन के अन्तर पर 2 से 3 बार करें।
जुलाई से सितम्बर	लाल सड़न, घासी प्ररोह, पर्ण दाह	1. लाल सड़न से ग्रसित गन्नों पर पैनी नज़र रखें। जैसे ही गन्ने की ऊपरी पत्तियॉं पीली पड़े या सूखें, ऐसे गन्ने को काटकर फाड़ लें और लाल सड़न के निश्चित होने पर पूरे थान को जड़ से उखाड़कर दूर ले जाकर जला दें। ऐसे खेत की मेड़बन्दी कर दें जिससे वर्षा का पानी समीप के स्वस्थ गन्ने के खेत में न जाये। ऐसे खेत में प्रतिदिन सूखते गन्नों पर ध्यान रखना आवश्यक है। 2. घासी प्ररोह से ग्रसित पौधों पर खेत के बाहरी भाग में नज़र रखें। ग्रसित पौधे अधिक तादाद में मिलने पर, खेत में कीटनाशक डाइमेक्रोन (0.02 प्रतिशत) का छिड़काव 15 दिनों के अन्तराल पर तीन बार करें। 3. पर्णदाह से ग्रसित पौधे (जिनकी पत्तियों पर सफेद धारियॉं बन जाती हैं और गन्ने की सभी आंखे अंकुरित हो जाती है) के थान को उखाड़ कर नष्ट करें।
	गेरूआ (किट्ट)	जैसे ही पत्तियों पर गेरूआ के लक्षण दिखाई पड़े, डाइथेन M 45 (0.25%) या डाइथेन ⁄ Z 78 (0.25%) घोल का छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर 3-4 बार करें।
	पीला धब्बा, आंख धब्बा	1. ग्रस्त पत्तियों को छीलकर जला दें। 2. कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (0.2%) घोल का छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर 3-4 बार करें।
अक्टूबर से कटाई तक	कंडुआ,उकठा	कंडुआ से ग्रसित किल्ले वर्षाकाल समाप्त होने के पश्चात् निकलते हैं जिन्हें दिखते ही काटकर बोरों में बन्द करके जला दें। उकठा से ग्रसित गन्नों को काटकर नष्ट करें।
कटाई के समय व उसके उपरान्त	कंडुआ, उकठा आदि	गन्नें की कटाई भूमि की सतह से करनी चाहिये। यदि संभव हो तो, पेड़ी कर्तक यंत्र से ठूंठो को समाप्त कर देना चाहिये। यदि रोगों का प्रकोप 15 -20 प्रतिशत से अधिक हो तो फसल अवशेषों को जला देना चाहिये।